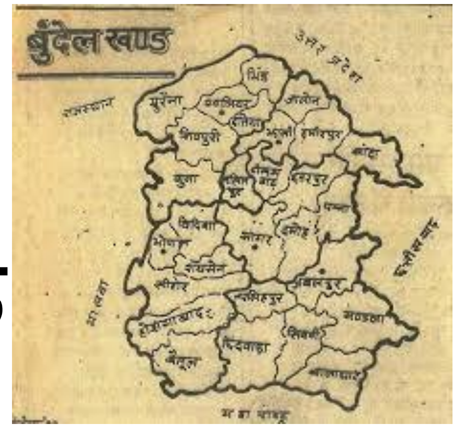
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक संगीत
Folk Music

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

लोक संगीत Folk Music

अध्याय शीर्षक	लोक संगीत
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Folk Music**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

लोक संगीत Folk Music

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक सन्गीत के रूपों का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड का लोक संगीत

मानव मन की भावनाओं तथा मनः स्थितियों की ध्वनियों के साथ अनुभूतिपरक अभिव्यक्ति का नाम ही लोक संगीत है। यह भाव सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। यह वह भाषा है जिसमें शब्द ही नहीं, स्वर लय ही भावों को व्यक्त करते हैं। घर की महिलाएं जब चक्की में गेहू पीसती है, आटा गूंथती हैं या माठा भांती है, तब उनके आभूषणों से निकली ध्वनियां उनकी तन्मयता में वृद्धि कर देती हैं। उनके मुंह से निकले गीतों के बोल तथा आभूषणों से निकले स्वर, मिलकर एक आनन्दमयी वातावरण का निर्माण करते हैं, रसधार प्रवाहित होने लगती है, यही रसधारा लोक संगीत का उत्सव है, उल्लास है।

संगीत रत्नाकर के अनुसार गीत, वाद्य और नृत्य की त्रयी ही संगीत है।

गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम्, संगीता मुच्यते।

संगीत के तीन वर्गीकरण हैं।

मार्गी संगीत   गांधर्व संगीत   देसी संगीत

इसमें पहले दो वर्गीकरण शास्त्रीय नियमों से बंधे हैं तथा देसी संगीत निबन्ध है अर्थात किसी से बंधा हुआ नहीं है। इसकी निबन्धता तथा सहजता से ही इस देसी कहा जाता है। देश देश में यानी विभिन्न अंचलों में इसका स्वरूप बदलता रहता है। यही संगीत का दूसरा नाम है। देसी संगीत ही अन्य दोनों का जनक व पथप्रदर्शक है। देसी संगीत जब लोक में प्रचलित या स्वीकृत नही होता तो विलुप्त हो जाता है। मन, दिल व आत्मा को झकझोर या मन्त्रमुग्ध कर देने वाला संगीत अमर हो जाता है।

लोक संगीत केवल वाद्य ध्वनि नहीं है, वाद्य उसके सुचारू प्रभावोत्पादन में अपना विशेष योग्य दान देते हैं, योगदान देते हैं। लोक संगीत की उत्पत्ति प्राकृतिक लयो से हुई है। वायु ध्वनि, वृक्ष के पत्तों के खड़कने की ध्वनि, पशु पक्षियों की ध्वनि आदि इनमें प्रमुख है। गृह कार्य करते समय महिलाओं के आभूषणों की ध्वनि, घुंघरू की ध्वनि, पशुओं के घन्टी, मानवीय आघात की ध्वनि आदि यह सब लोक संगीत के आधार हैं। महिला कण्ठ ध्वनि से ही लोक संगीत की लय बना लेती हैं, आगे चल कर लोकसंगीत की धुने बनती है। यही शास्त्रीय संगीत में राग की जनक है। बुन्देली लोकसंगीत में यह धुने लगभग पचासों तरह की है या ज्यादा ही हो सकती हैं। इन्हें बुन्देली लोकसंगीत का स्वर संदर्भ कह सकते हैं।

जब लोक वाद्य नहीं होते हैं, तब गृह उपयोगी सामान से ही आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न करके वाद्य का काम लेते हैं। जैसे महिलाएं कांसे की थाली, कटोरा, लोटा, मटका, चमिता/ चिमटा या लकड़ी के टुकड़े से किसी आघातकारक वस्तु से बजाकर लयबद्ध तथा संगीत में नाद उत्पन्न करती हैं और गीत गाती हैं। यही सब मिलकर लोकसंगीत बनता है।

लोक जीवन के यह उपकरण, लोक वाद्य, शास्त्रीय वाद्य तक के जनक हैं। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि लोक वाद्य ही शास्त्रीय वाद्य के जनक व विकसित रूप है।

लोक वाद्य चार प्रकार के होते हैं–

फूंक नाद   तांत्र वाद्य   खाल वाद्य   घनवाद

इन सब का विस्तृत वर्णन वाद्य अध्याय में दिया जाएगा।

बुन्देलखण्ड के लोकजीवन में लोकरंजन का सबसे सशक्त माध्यम फड कुछ दिनों बाद सिर्फ यादों की धरोहर रह जायेगा, तब न चंग की थाप पर ख्याल सुनने को मिलेंगे और न फगवारो की फागे। फड़ के अन्तर्गत गांव की चौपाल में चबूतरे या तखत के बने मंच पर दो प्रतिद्वन्दी पक्ष बैठते थे। संगीतबद्ध गायन प्रतियोगिता होती थी। गांव में फड़ रात भर चलता था। पूरे गांव के स्त्री पुरुष रात–रात भर आराम छोड़कर फड़ से रस विभोर होते थे। इसमें गाया जाने वाला साहित्य फड साहित्य कहलाता है। इसके अन्तर्गत ख्याल, लावनी, सैरा, सैरे, फाग लेदे, मंजे झोलना, तडाका आदि का संगीतबद्ध गायन होता था। गांव के अनपढ़ किन्तु लोक विधा मर्मज्ञ रसिक श्रोता इनकी परख रखते

थे। जो पक्ष प्रतियोगिता में मात खा जाता था। उसकी चंग या ढोलक छीन ली जाती थी। इन विधाओं में सर्वाधिक लोक प्रिय विधा ख्याल रही है। किन्तु अब वह भी विलुप्तोनामुख है।

फड़बाजी तथा ख्यालबाजी

ख्याल मूलतः संगीत की विधा है। संगीत की शास्त्रीय शैली ध्रुपद, धमार तथा लोक शैली ख्याल है। लोक रीतिकारों ने इसे शास्त्रीय छन्द का स्वरूप दिया है। यह 22 पंक्तियों का मात्रिक छन्द है। प्रत्येक पंक्ति मे 32 मात्रायें होती है। प्रारम्भिक दो पंक्तियां टेक की होती है। इसके बाद पांच–पांच पंक्तियों के चार छन्द होते हैं। इनमें चार पंक्तियों के चौक के बाद, पांचवी पंक्ति उड़ान की होती है। इसकी विशिष्ट गायन शैली है जिसे तर्ज या बहर कहते हैं। बहर को अनेक प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। जैसे बहर खड़ी, बहर लंगड़ी, छोटी, शिकस्ता, मुखफ्फा तथा तबील आदि। इसका वाद्य चंग है।

ख्याल को खेलपरक (प्रति स्पर्धात्मक) माना जाता है। ख्याल का अर्थ है विचार यानि सामयिक विचार। इस प्रकार ख्याल का भाव पक्ष व्यापक हो जाता है। सामान्यतया ख्याल को ख्याल–लावनी कहकर पुकारते हैं। लावनी का अर्थ है सलौनी (लावण्यमयी) यानी प्रतिस्पर्द्धात्मक समसामयिक सलौनी कविता। ख्याल गायन के दो सम्प्रदाय हैं– कलगी तथा तुर्रा। इसके पीछे एक जनश्रुति है। बताते हैं कि अमीर खुसरो के समय शाह अली तथा तुफनगिरि नामक दो ख्याल गायकों में कई दिन की फड़बाजी में जब उच्चता का निर्णय नहीं हो सका तो खुसरो ने एक को कलगी तथा एक को तुर्रा पहनाकर उसकी दो शाखायें घोषित कीं। तब से इसके दो संप्रदाय घोषित हुये कलगी संप्रदाय शक्ति का उपासक होता है, तुर्रा शिव का। इसका मुख्य विकास रीतिकालीन व्यवस्था में होकर गांव–गांव में फैल गया। बुन्देलखण्ड में यह विधा विलुप्तोन्मुख होने के बावजूद, मऊरानीपुर, गुरसराय, समथर, झांसी, कोटरा तथा कालपी मे अभी भी ख्यालबाजी का आयोजन होता रहता है। जिसमें देश के अन्य भागों से भी ख्यालगायक आते है। इस समय बुन्देलखण्ड के प्रतिनिधि ख्यालगायक राघवदास सेठ तथा शिवाजी चौहान (दोनों गुरसराय निवासी) हैं। इनमें राघवदास सेठ को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था। बुन्देलखण्ड के अलावा ख्याल गायन की परम्परा लखनऊ, फिरोजाबाद, एटा, अलीगढ़ तथा हाथरस में भी लोक प्रिय हैं। इन स्थानों पर ख्याल के अच्छे गायक अभी भी साधनारत हैं।

ख्याल के लेखन की भांति गायन भी शास्त्रीय स्तर का होता है। एक पक्ष जिस ढंग से ख्याल प्रस्तुत करता है– उसी ढंग से जवाब दूसरा पक्ष देता है। उदाहरण के लिये यदि ख्याल सगण में लिखा जाता है तो उसकी सभी पंक्तियां सगण में होंगी तथा प्रतिद्वन्दी ख्यालबाज को भी सगण का ख्याल सुनाना पड़ता है। सगण ख्याल का एक उदाहरण देखिये–

कर ले पट घूंघट भट्ट, शशि आंगन को उजियार न हो।
चलिये गति मंद मयंक मुखी, पग पायल की झनकार न हो। (कवि भोगीलाल सेठ)।

रीतिशास्त्र के अनुसार सगण में प्रथम दो अक्षर लघु तथा तीसरा दीर्घ होता है। पूरी पंक्ति में अक्षरों का यही क्रम रहता है।

इसी प्रकार यदि विषय की दृष्टि से एक ख्यालबाज ने खण्डिता नायिका या बसंत या सिंहावलोकन (कथा–प्रसंग) का ख्याल सुनाया तो प्रतिद्वन्दी को भी खण्डिता नायिका के जवाब में खण्डिता नायिका का, बसंत के जवाब में बसंत का या सिंहावलोकन के जवाब में सिंहावलोकन का ख्याल सुनाना पड़ता है। सिंहावलोकन का एक उदाहरण देखें–

तकत पराई नार पिया तुम, अपनी हठ क्यों नही तजत।
तजत न जग की मात, नाथ के शठतावश ना चारण तकत।।

यह कुण्डलिया शैली का सिंहावलोकन है– तो प्रतिस्पर्धी को कुण्डलिया शैली का ही सिंहावलोकन ख्याल सुनाना पड़ेगा, वरना वह मात खा जायेगा। ख्यालवाजी में एक और परम्परा रही है, मौलिक सुनाने की। डायरी को पढ़कर सुनाने की अनुमति नहीं होती थी। इस प्रकार ख्याल गायक की अनेक विशेषतायें दृष्टि गोचर होती है। पहला, उसकी स्मरण शक्ति अच्छी होनी चाहिये। छन्दशास्त्र का ज्ञान होना चाहिये। प्रत्युत्पन्नमति होना चाहिये ताकि प्रतिद्वन्दी का ख्याल सुनकर तुरन्त निर्णय लेकर उसी शिल्प तथा भाव का ख्याल सुना सके।

ख्यालबाजी की सबसे खास बात यह है कि इसके ग्रामीण श्रोता भी पारखी होते थे। भाव तथा शिल्प की परख गांव के अनपढ़ लोगों को भी होती थी। वे ही इस प्रतिद्वन्दी–गायन के असली निर्णायक होते थे। वे मात खाने वाले ख्याल गायक की ढपली छीनकर भगा देते थे। इस प्रकार ख्यालबाजी गायक तथा श्रोता का साझा–कार्यक्रम था।

ख्यालबाजी की जवाबी–प्रतियोगिता का एक दुष्परिणाम सामने आया–ख्याल साहित्य को छिपाने का। दूसरे के हाथ न लग जाये, वरना प्रतिस्पद्धी से मात खानी पड़ सकती है– इस विचार से ख्यालबाज अपने साहित्य को अपने परिवार या अखाड़े के शिष्यों तक को ही देते थे अथवा बस्तों में बंद रखते थे। अनेक ख्यालबाज आशुकवि भी होते हैं। इन कारणों से ख्यालबाजी की बुन्देलखण्ड में समृद्ध परम्परा के बावजूद ख्याल–संग्रह नहीं छपे। फड़ सहित्य के शोधकर्ता स्व0 डा0 गणेशीलाल बुधौलिया के अनुसार गुरसराय के सेठ भोगीलाल गुप्ता (राघवदास सेठ के पिता) ने लगभग ढाई हजार ख्याल लिखे थे। वे 800–800 की तीन जिल्दों में थे। श्री राघवदास सेठ के अनुसार इनमें एक जिल्द दीमक खा गये हैं। दो जिल्द में लगभग डेढ़ हजार ख्याल अभी भी उनके पास हैं। इसी प्रकार जालौन के चंदनगिरि तथा बल्देव प्रसाद कसगर ने भी काफी ख्याल लिखे थे। किसी जमाने में गंगाधर व्यास तथा ख्यालीराम स्तरीय ख्याल तथा फाग लेखक एवं गायक रहे हैं। कोंच के मन्नूलाल चौधरी तथा मोहनलाल दाऊ भी ख्याल के क्षेत्र में लोक प्रिय रहे हैं।

संगीत तथा लोक संस्कृति से जुड़ी संस्थायें यदि ख्याल साहित्य के प्रकाशन पर ध्यान दें, तो इस विलुप्तोन्मुख विधा को बचाने में मदद मिल सकती है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

संदर्भ
बुन्देलखण्ड विनीता 110
सान्स्कृतिक बुन्देलखण्ड ंलवकीलं चतेंक ानउनकष्दोतंजपा पे110, सगण (115)

त्मि 2015ण्269421ण्इनदकमसींदक.ा अंकलं लंदजतं 1.75
विनीता पेज 110 बुन्देलखण्ड
बुन्देलखण्ड पेज 112 विनीता

लोक संगीत **Folk Music**